Untitled

रमईया मेरे तोही सूँ लायी नेह।
लगी प्रीति जनि तोड़ै रे बाला, अधकि कीजै नेह।
जो हूँ ऐसो जानती रे बाला, प्रीति कीयाँ दुष होय।
नगर ढंढोरी फेरती रे प्रीत करो मत कोय।
षीर न षाजे आरी रे, मूरष न कीजै मिंत।
षिण ताता षिण सीतला रे, षिण वैरी षिण मित।
प्रीत करें ते बावरा रे, करि तोड़ै ते कूर।
प्रीत निभावण दलके षंभण, ते कोई बिरला सूर।
तुम गजगीरी को चूँतरी रे, हम बालू की भीत।
अब तो म्याँ कैसे वणै रे, पूरब जनम की प्रीत।
एकै थाणै रोपिया रे, इक आँबो इक बूल।
वाकौ रस नीकौ लगै रे, वाको लागै सूल।
ज्यूँ डूगर का वाहला रे, यूँ ओछा तणा संनेह।
बहता बहैजो उतावला रे, वे तो अंटक बतावे छेह।
आयो सावन भादवा रे, बोलण लगा मोर।
मीराँ कूँ हरिजन मिल्या रे, ले गया पवन झकोर।।